सौंदर्य एवं उदात्तता के परिप्रेक्ष्य में सुमित्रानंदन पंत का काव्य

डॉ. आर.पी. वर्मा,
एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

मानव के गहन अंतर्मन में कई भावों और मनोविकारों का संगुफन होता है। समय आने पर भाव जाग्रत् होकर मन को संवेदनशील बनाते हैं और मन में एक विशिष्ट चेतना जाग्रत् होती है, जिसे सौंदर्य कहते है। सौंदर्य सर्वत्र है और कहीं भी नहीं। जिस प्रकार जीव एवं संसार है भी एवं नहीं भी, क्योंकि दोनों ईश्वर की इच्छा के परिणाम हैं, उसी प्रकार सौंदर्य पारखी के लिए सर्वत्र सौंदर्य है और जिसमें सौंदर्य–दृष्टि ही नहीं, उसे कहीं भी सौंदर्य दृष्टिगोचर नहीं होगा। सौंदर्य तो एक अनुभूति है, जिसे सौंदर्यानुभूति कहते है। यह सौंदर्यानुभूति सौंदर्य–बोध है तथा रसानुभूति ही रस–बोध है। सौंदर्य तो निष्पाप एवं कलंकरहित होता है। भोग, रूप और अभिव्यक्ति–इन तीनों पर सौंदर्य टिका होता है। सौंदर्य श्रृंगार एवं लालित्य से भी जुड़ा होता है। मेरा यह मानना है कि सौंदर्य की अनुभूति के लिए आलंबन या वस्तु आवश्यक होती है। सौंदर्य तो प्रतीयमान गुण है और उसकी सत्ता सदैव प्रमाता–सापेक्ष होती है। पाश्चात्य सौंदर्य–चिंतक यह मानते हैं कि सौंदर्य किसी भौतिक वस्तु या पदार्थ का गोचर रूपात्मक गुण है, जिसका जन्म प्रमाता की चेतना से होता है। सौंदर्य ऐसी दिव्य अनुभूति है, जो जीवन को तृप्त बनाता है, प्राणों में स्फूर्ति और हृदय में उदात्त भावों का संचार करता है। जीवन इसी से विकास पाता है। सौंदर्य मानव को ऐसे कल्पनालोक में विचरण कराता है, जहाँ आलोक ही आलोक होता है और सौंदर्य की अनुभूति करनेवाला अपूर्व शांति का अनुभव करता है। जो वस्तु आनंद दे, कल्पना जाग्रत् करें, वह अपने–आपमें ही सुंदर होती है। सौंदर्य तो चिन्मय होता है। सौंदर्य के गोचर–अगोचर दोनों रूपों में आकर्षण तथा मूल्य उत्पन्न करने वाले तत्वप्रीति और प्रज्ञा ही होते है। जिस प्रकार सौंदर्य मानव चेतना से संबद्ध होता है, वैसे ही सौंदर्य और उदात्तता का संबंध होता है। सभी कलाओं में साहित्य ही ऐसी श्रेष्ठ कला है, जिसमें जीवन के धूपछाँही रंग झिलमिलाते है। साहितय में भी मूलतः कविता ऐसी विधा है, जिसमें तात्विक सत्य का रंग भरा जाता है। अपनी इसी अंतः सूक्ष्म भावना के कारण सहित्य को मानव–जीवन की उदात्तम अभिव्यक्ति कहा जाता है।

दर्शन और चिंतन कोई अलग–अलग शब्द नहीं, कयोंकि कवि या सहित्यकार का चिंतन या दर्शन साहित्य को उदात्त बनाता है। उदात्तता को महान प्रतिभा की विभूति माना जाता है, अतः यह भाव साहित्य की सामान्य प्रकृति है। उदात्तता का यह भाव सुख से ज्यादा दुःख में अधिक दिखाई देता है। सर्जन की प्रेरणा और उद्देश्य की महानता उदात्तता का रहस्या छिपा है। 'गरिमा' एक ऐसा शब्द है, जिसके विभिन्न श्रोतों में एक श्रोत उदात्तता भी है। उदात्तता का शब्दिक अर्थ है उन्नत किया हुआ है। जब हम उन्नत की बात करते हैं तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि उदात्तता या गंभीरता जैसे कोई कला है या नहीं। साहित्य में उदात्त के पाँच प्रमुख श्रोत है। इन श्रोतों का आधापर अभिव्यक्ति की सजह क्षमता है। किसी भी क्षेत्र में संपन्नता

और महत्ता उसके प्रधान लक्षण है। उदात्ता के कितने ही अर्थ निकाल लिए जाएँ, किंतु इस शब्द का भाव अत्यंत विराट्ता एवं गंभीरता समेटे है। यह शब्द एक लाक्षणिक अर्थ की व्याख्या करता है कि जिस प्रकार कला एवं जीवन दोनों में सौंदर्य तथा कुरूपता का संबंध रूप से माना गया है, तो क्या उदात्तता को इससे हटकर देखा जा सकता है? उत्तर है नहीं, क्योंकि सौंदर्य की मूल विभूति है और उदात्तता उसका रूपांतर। सामान्य सौंदर्य की अतींद्रियता में उदात्तता की अनुभूति होती है। गंभीर चिंतन करने पर एक बात स्पष्ट हो जाती है कि कला या साहित्य में इन उदात्त मूल्यों का सौंदर्य या सौंदर्यानुभूति से प्रत्यक्ष संबंध तो नहीं होता, किंतु सत्य एवं शिव का प्रतिपादन करने वाले ये मूल्य उदात्त से जुड़कर भव्य हो जाते हैं। ये औदात्यपरक मूल्य सौंदर्य के निर्धारक मूलभूत आधार होते हैं। साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है अर्थात् समाज की यथार्थता ही साहित्य की अभिव्यक्ति है, इसलिए समाज उसे सौंदर्य के साथ–साथ उसकी उदात्तता के कारण ग्रहण करता है। विराट् रूप–सौंदर्य को उदात्तता का श्रोत माना गया है। महत्ता और शक्तिमत्ता जैसे गुण इसी विराट् रूप सौंदर्य को गरिमा प्रदान कर उदात्तता के स्वरूप और उनकी अनुभूति को चरम सीमा पर ले जाते है। उदात्तता रूप सौंदर्य का द्योतक होती है और उदात्त की अन्य विशेषताओं को उसी के माध्यम से ग्रहण किया जाता है। जिस प्रकार सौंदर्य एवं कुरूपता व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ होते हैं वैसे ही उदात्तता के लिए दोनों दृष्टियाँ लागू होती है। कल्पना की शक्ति जितनी तीव्र होगी, प्रकृति और जीवन में मूर्त और अमूर्त, उदात्त के दोनों रूप, ओजस्वी बिंब–विधान के द्वारा उदात्ता की अनुभूति दे सकते हैं। क्रोचे ने सौंदर्य के सामने उदात्तता का वर्गीकरण नहीं स्वौकार किया। सौंदर्य तो वास्तव में वस्तु धर्म और व्यक्ति–मन की सापेक्षता है और यही बात उदात्तता के विषय में कही जा सकती है। एक और सौंदर्य की अनुभूति में वस्तु के रूप धर्म के साथ व्यक्ति मन की तदावार परिणति होती है। दूसरी ओर उदात्तता में वस्तु और व्यक्ति का अंतर बना रहता है। लॉवलाइनस के अनुसार, उदात्ता आत्मा की महानता का प्रतिबिंब है। हीगेल का माना है कि उदात्तता की कलात्मक अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक होती है। रस्किन ने जीवन–जगत की महत्ता में उदात्तता का दर्शन किया। ब्रेडले शुद्ध रूपवादी कलात्मक अभिव्यजन की शक्तिमत्ता में ही इस उदात्ता के दर्शन करते है।

क्रोचे के अनुसार उदात्तता अभिभूत कर देनेवाली नैतिक शक्ति है, तो दूसरी ओर वह अनैतिक और विरूपता से अभिभूत कर देनेवाली। उदात्त की व्याख्या करते हुए हरद्वारीलाल शर्मा कहते हैः–समीस बंधनग्रस्त मानव–व्यक्तित्व में असीम और अनंत के उदय से अनंत वेदना और आनंद का एककालिक सामयिक अनुभव होता है, यही अनुभव उदात्त का अनुभव है।

मानरव निर्मित कलाओं की अपेक्षा सृष्टि कलाओं में व्यापक उदात्तता के दर्शन होते है। जहाँ एक ओर मनोवैज्ञानिकों ने अव्यक्त या अंतश्चेतना में उदात्त के दर्शन किए, वहीं दूसरी ओर छायावादी कवियों ने जीवन की सामाजिकता में सौंदर्य और उदात्त के दर्शन किए। कविवर पंत ने काव्य के मनोनीति तत्वों में सौंदर्य चेतना को प्राथमिकता दी। उनका मानना था कि कवि या कलाकार सबसे पहले सौंदर्य का स्रष्ट है, क्योंकि उसे जगत और जीवन की कुरूपता को सौंदर्य में परिवर्तित करना पड़ता है। उनका कथन है, कलाकार के पास हृदय का यौवन चाहिए। धरती पर उँड़ेलकर उसे जीवन की कुरूपता को सुंदर बनाना है। (गद्य पथ, साहित्य भवन, पंत) पंत का सौंदर्य चिंतन आत्मनिष्ठ है। कवि कहता हैः–

चित्रण ! इस सुख का श्रोत कहाँ

जो करता नित सौंदर्य सृजन?

वह स्वर्ग छिपा डर के भीतर

क्या कहती यही, सुमन –चेतन?

पंत की सौंदर्य चेतना कवि के अनुभूति समृद्ध अंतर्जगत् है, जिसका एक छोर जग–जीवन की अंतरतम स्वर – संगति अर्थात शिवत्व में संबद्ध है तो दूसरा छोर स्वप्नों के स्वर्णिम प्रवाह अर्थात् कल्पना से–

क्या है यह सौंदर्य चेतना? जग जीवन की

अंतरतम स्वर संगतिः जो अब अंतर्नभ के

शिखरों के उत्तर रही स्वर्णिम प्रवाह से स्वप्नों से

शोभा उर्वर करने असुधा को।

(शिल्पी)

पंत की प्रारंभिक रचनाओं में सौंदर्य का दैहिक रूप मिलता है और बाद की कृतियों में आत्मिक रूप है। इसका उत्कृष्ट उदाहरण उतरा है। पंत ने अपने सौंदर्य को दो आधारों पर रूपायित किया है। प्रथमतः मशीनीयुग का मध्यवर्गीय सौंदर्य, द्वितीय मशीनीयुग का जनवादी सौंदर्य। पंत की छायावादी रचनाओं में मध्यवर्गी चेतना का सौंदर्य तथा प्रगतिवादी रचनाओं में जनवादी सौंदर्य दृष्टिगोचर होता है।

पंत की कविताओं में सौंदर्य के चार रूप नैसर्गिक सौंदर्य, सामाजिक सौंदर्य, मानसिक सौंदर्य एवं आध्यात्मिक सौंदर्य दिखाई देते हैं। सौंदर्य के इन्हीं चार रूपों के साथ उदात्तता जुड़ी है। जिस प्रकार भावों एवं विचारों में सौंदर्य होता है, वैसे ही उदात्तता भी। कवि की प्रकृतिपरक कविताओं में नैसर्गिक सौंदर्य के दर्शन होते है। पंत ने स्वयं स्वीकार किया है कि प्रकृति के साहचर्य ने मुझे सौंदर्य, स्वप्न और कल्पनाजीवी बनाया (पंत–आधुनिक कवि, हिंन्दी–साहित्य–सम्मेलन, प्रयाग)

इसी प्रकृति में उन्होंने नीरी के उदात्त रूप के दर्शन किए–

कुमु–कला बन कल हासिनी,

अमृत–प्रकाशिनि नभ–वासिनी,

तेरी आभा को पाकर माँ!

जग का तिमिर–त्रस हर दूँ।

(वाणी)

कवि की चितेरी दृष्टि हर जगह सौंदर्य ढूँच लेती है–

शैवलिनि! जाओ मिलो तुम सिंधु से

अनि! आलिंगन करो तुम गगन का

चंद्रिके! चूमो तरंगों के अधर

उडुग्नो गाओ, पवन वीणा बजा,

पर हृदय सब भाँति तु कंगाल है।

वाणा पल्लव ग्रंथि जैसा रचनाओं में कवि की सौंदर्य लालसा की पूर्ति प्रकृति द्वारा पूर्ण होती दिखाई देती है। प्राकृति उदात्तता के अनेक रंग इन कृतियों में बिखरे पड़े हैं कवि के सामाजिक सौंदर्य में लोकमंगल की भावना का सौंदर्य है, जिसमें पग–पग औदात्य के दर्शन होते हैं। कवि की प्रगतिवादी रचनाआं में दिखाई देनेवाला सौंदर्य ही सामाजिक सौंदर्य है। ''ज्योत्सना युगांत जैसा रचनाएँ सामाजिक सौंदर्य की भूमिका बाँधती दिखाई देती हैं तो युगवाणी ग्राम्य जैसी रचनाएँ सामाजिक सौंदर्य दृष्टि से ओम–प्रोत हैं। पंत गाँधीवाद पर पूर्ण विश्वास करते थे–

इस भस्म–काम तन की रज से

जग पूर्ण–काम नव जग–जीवन,

बीनेगा सत्य अहिंसा के

ताने–बानों से मानवपन।

(युगवाणी)

परिवर्तन विश्व का नियम है। मानव जीवन के जिन आदर्शों और रीति–रिवाजों का सर्जन जीवन के उत्कर्ष के लिए करता है, वह कुछ दिनों में पुराने पड़ जाते है। कवि इसपर अपना विश्वास व्यक्त करते हैं–

जग–युग की स्वर्णिम किरणों से होगी भू

आलोकित।

(युगवाणी)

कवि जीवन उदात्तता अहिंसा में देखते हैं–

नहीं जानता युग–विवर्त में होगा कितना

जन–क्षय,

पर मनुष्य को सत्य अहिंसा इष्ट रहेंगे निश्चिय।

(युगवाणी)

आज का श्रमिक, युग–निर्माता है, ऐसा कवि का दृढ़ विचार है–

चिर पवित्र यह भय, अन्याय, घृण से पालित,

जीवन का शिल्पी–पावन श्रम से प्रक्षालित है।

कवि के सामाजिक सौंदर्य में महान् उदात्ता के दर्शन होते हैं। जीवन के प्रति उदात्त दृष्टिकोण उनकी सौंदर्य–साधना का मूल है।

पंत के मानसिक सौंदर्य और आध्यात्मिक सौंदर्य बहुआयामी है। जब मानसिक सौंदर्य विकास पाता है तो आध्यत्मिक सौंदर्य का रूप ले लेता है। मानसिक सौंदर्य कल्पना से जुड़ा होता है। मानसी कविता में इसी मानसिक सौंदर्य की अभिव्यक्ति हुई है–

स्वच्छ चाँनी हो तुम स्मृति कूलों पर सोई।

ओस धुली, उषाओं की निःस्वर द्वाभा–सी

वन फूलों की कोमलता में सजह सँजोई।

स्वप्न देश की परियों की मृदु राजकुमारी कोई।

(वाणी)

कविक स्वंय मानते हैं कि ''अपनी भावना तथा कल्पना के पंखों से मैं जिन सौंदर्य–क्षितियों को छू सका हूँ, वे मुझे दार्शनिक स्त्यों से अधिक प्रकाशवान एवं सजीव लगते है। (चिदंबर)

मानसिक सौंदर्य का एक उत्कृष्ट रूप देखें–

बाल रजनी सी अलक श्री डोलती

भ्रमित सी शशि के वदन के बीच में।

अचल, रेखांकित कभी थी कर रही

प्रमुखता मुख्य की सुछवि के काव्य में।

(ग्रंथि)

कल्पना और उदात्तता कवि के काव्य के प्राण–तत्व है। कवि आध्यात्मिक सौंदर्य का एक रूप प्रस्तुत करते हुए कहता है –

जो अकूल की उज्जवल हास। अरी अतल की

पुलकित श्वास।

महानद की की मधुर उमंग। चिर शाश्वत की

अस्थिर लास।

(पल्लव)

कवि के अनुसार, जीव के जन्म एवं मरण दोनों के संचालक ब्रह्म हैं। कवि सृष्टि के विनाश और निर्वाण में ब्रह्म के स्वरूप का दर्शन करते हैं :–

एक ही तो असीम उल्लास, विश्व में पाता

विविधाभास,

वही उन–उर में प्रेमोच्छ्वास, काव्य में रस, कुसमों में वास,

अचल तारक पलकों में हास, लोल लहरों में लास,

विविध द्रव्यों में विविध प्रकार, एक ही मर्म मधुर झंकार

(परिवर्तन)

सौंदर्य की अनुभूति की जाती है। सौंदर्य मन में चेतना जगाता है तब कलाकार जिन भावों की अभिव्यक्ति करता है, उसके मूल में छिपा संदेश उदात्तता की सृष्टि करता है। कवि पंत की छायावादी और प्रगतिवादी रचनाओं में सौंदर्य के विभिन्न रूप है, तो उनकी अभिव्यक्ति में अनेकों उदात्त भाव। परिवर्तन ही सत्य है, सत्य निरंतर एवं शाश्वत है। यही सत्य कवि पंत की कविताओं में मूर्त रूप लेकर अवतरित हुआ है। मानवीय भावों के साथ–साथ आधुनिक जीवन में अनेक सिद्धांतों का सार कवि की कविताओं में है। सौंदर्य एवं उदात्त के रेशमी धागों में बँधी कवि की कविताओं में उनकी आत्मा प्रतिबिंबित होती दिखाई देती है।

कवि पंत ने अपनी कृतियों के माध्यम से विश्व–मानवतावाद का संदेश दिया है। उन्होंने विभिन्न मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हुए मानव को संघर्ष की शक्ति दी। अतीत की विकृतियों को सारहीन मानकर कवि आशवादी स्वरों में गा उठता है कि मेरे गीत जगती के कष्टों को हर कर उसमें स्पंदन भरेंगे। कवि की कविताओं में प्रगतिशील मानव तथा समाज का भव्य चित्र दिखाई देता है। उनका अटल विश्वास है कि भावी समाज–व्यवसथा में नारी का विशेष योगदान होगा। कवि उदात्त भावना व्यक्त करते हुए कहते हैं कि भविष्य में प्रेम का राज्य होगा, सृष्टि से दैन्य दुःख क्षुधा मिट जाएँगे, मानव–जीवन से क्षुद्रताओं का नाश हो जाएगा 'युगवाणी एवं ग्राम्या' जैसी रचनाओ में कवि के यही उदात्त भाव बिखरे पड़े है। इस प्रकार पंत की रचना यात्रा कई पड़ावों से गुजरी है। जिस प्रकार हीरे पर प्रकाश पड़ते ही वह जगमगाकर अंधकार में प्रकाश भर देता है, वैसे ही पंत की संपूर्ण काव्य कृतियाँ सुंदरता एवं उदात्तता की विविध छटा समेट हुए हैं। जीवन की साधना करते हुएकवि ने सन् 1925 से 1963 तक की समसामयिकता को जिस कुशलता से समेटा है, उसका अपना अलग महत्व है। आज काव्य चेतना में परिवर्तन आता जा रहा है। ऐसी स्थिति में कवि पंत की कविताएँ जनमानस में सदैव संवेदना जाग्रत करती रहे–

मिट्टी से भी मटमैली तन

अधफटे, कुचैले, जीर्ण वसन,

ज्यों मिट्टी के हों बने हुए

ये गँवई लड़के–भू के धन

कोई खंडित, कोई कुंठित

कृश बाहु, पसलियाँ रेखांकित

टहनी सी टाँगे, बड़ा पेट

टेढ़े, मेढ़े विकलांग घृणित।

(ग्राम्या)

संदर्भ

- पंत के काव्य में उपादन–डॉ0 आर0पी0 वर्मा
- हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य राम चन्द्र शुक्ला
- पंत के काव्य में उपादन – डॉ0 आर0पी0 वर्मा

- 4 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास–बच्च सिंह